B.A. History Hon's, Part: I

Paper: I, Unit - IV. Date: 1.12.2020

Lession: गुप्तकाल की सांस्कृतिक देन

गुप्तकाल में विदेशों से धार्मिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध के कारण से गुप्त शासकों के
संगठित प्रशासन, परोपकारी शासन तथा उनकी सहिष्णुता और कला एवं साहित्य आदि के
क्षेत्र में उदार संरक्षण के कारण भारत की उन्नति हुई। क्या राजनीतिक, क्या सामाजिक, क्या
आर्थिक, क्या साहित्य, क्या कला, हर क्षेत्र में आशातीत उन्नति हुई। यह वही युग था
जब सम्पूर्ण भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति अपने चरमसीमा पर पहुँची। इसी युग को
स्वर्णयुग के नाम से जाना जाने लगा। उसकी तुलना यूनान के पेरिक्लियन युग से की
जाने लगी।

राजनीतिक दशा: राजा को दैविक शक्ति का प्रतीक माना जाता था। किन्तु मंत्रियों का उस
पर नियंत्रण होता था। उस समय का प्रशासन एक आदर्श प्रशासन था।

सामाजिक दशा: सामाजिक क्षेत्र के इस युग में कई महत्वपूर्ण हुए। विदेशी भी भारतीय
समाज में विलीन हो गये, उन्होंने भारत धर्म का तौर-तरीका अपनाया। वैष्णव धर्म
और शैव धर्म के समाज को प्रभावित किया।

समाज का ढांचा: इस युग में समाज रुढ़िगत रुप से 4 वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र)
में विभाजित था। अन्तर्जातीय विवाह के कारण अन्य जातियाँ और उपजातियाँ
अस्तित्व में आयी। व्यवसाय आवश्यक रुप से जाति पर निर्भर नहीं था।

दास प्रथा: कुबेर लोग दास रखते थे। दासों के साथ जो व्यवहार किया जाता था वह उनके
मालिकों की प्रकृति पर निर्भर रहता था।

आश्रम व्यवस्था: वर्ण के साथ ही व्यक्तिगत जीवन का आश्रमों में विभाजन भी इसी युग
में ज्ञात हुआ था।

शिक्षा: शिक्षा निःशुल्क थी। राजा की ओर से शिक्षकों एवं शिक्षा संस्थाओं को अनुदान
दिये जाते थे। शिक्षा के विषय- वेद, पुराण स्मृति, तर्क, व्याकरण, ज्योतिष, खगोलशास्त्र आदि थे।

परिवार: उस समय संयुक्त परिवार था। मुख्यतः प्राजापत्य विवाह होता था। अन्तर्जातीय
अनुलोम, प्रतिलोम विवाह के उदाहरण भी मिलते हैं। औरतें साधारणरुप से शिक्षित होती थीं।

स्त्री-दशा: स्त्रियों की दशा समाज में ठीक-ठीक था। गरीब औरतें बुनाई, कताई का
तथा नृत्य-गाने आदि का उन्हें प्रशिक्षण दिया जाता था। वेश्या प्रथा इन
कार्य कर जीविका कमाती थी। सती प्रथा बहुत प्रचलित हो गयी थी।
समय थी। राजकुलीन घरानें की औरतें अन्तःपुर में रहती थी ताकि अजनबियों की नजर उन पर
नहीं पड़ सके।

नागरिक जीवन: नागरिक जैसा कि कहता है कि स्वस्थ एवं सुन्दर होता था तथा विभिन्न
कलाओं का अनुभवी था। वह आराम तथा आनन्द का जीवन व्यतीत करता था।

वस्त्र और आभूषण: वस्त्रों में पगड़ी, दुपट्टा, ब्लाउज, घाघरा, शाल, फ्रॉक, कोट आदि
आदि मुख्य थे। सूती वस्त्र रोज पहनते थे। आभूषणों में चूड़ामणी, रत्नजाल, मुकुटजाल,
कर्णभूषण, मणिकुण्डल, निष्क, मुक्तावली, हार, हेमसूत्र, वलय, भुजबन्द, करधनी, नुपूर आदि का प्रचलन था।

प्रसाधन: नख, शरीर, चेहरे, बाल आदि के प्रसाधनों का उपयोग किया जाता था।

आमोद-प्रमोद: उस समय के आमोद-प्रमोद में शतरंज, जुआ, शिकार, जानवरों की लड़ाई,
कहानी, गेंद खेलना, नाटक देखना आदि मुख्य थे।

खान-पान: शाकाहारी तथा मांसाहारी दोनों का प्रचलन था। सुरा पीने, पान खाने का रिवाज भी था।

अन्ध विश्वास: इस समय के साहित्य से पता चलता है कि लोग ज्योतिष, शकुन आदि में भी
विश्वास रखते थे।

आर्थिक दशा: गुप्तकालों के दक्ष प्रशासन के द्वारा देश में स्थापित शांति एवं समृद्धि के
फलस्वरुप कृषि, उद्योग, व्यापार एवं वाणिज्य में खूब उन्नति हुई। उद्योग और
व्यापार का एक पृथक मंत्री होता था जिसे द्रांगिक कहते थे। विनिमय के लिए
सिक्कों का उपयोग होता था।

कृषि उस समय का मुख्य व्यवसाय था। बारिश पर ही कृषि निर्भर थी। चावल, जौ, ज्वार, बाजरा, गन्ना, कपास, मसाले, जड़ी-बूटियाँ आदि उत्पन्न किये जाते थे।
उद्योग: उद्योगों में कपड़ा उद्योग प्रमुख था। कपड़ा बाहर जाता था। इसके अन्तर्गत शिल्प, चित्रकारी, हाथी दाँत का काम तथा कई अन्य प्रकार के उद्योग प्रचलित थे।
व्यापार एवं वाणिज्य: व्यापार एवं वाणिज्य में काफी प्रगतिशील थे। अन्तर्देशीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय दोनों ही प्रकार का व्यापार होता था।
धार्मिक दशा: धर्म के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। संहिता और ब्राह्मण के स्थान पर अब पुराणों ने स्थान ले लिया। वैदिक देवी-देवता इस समय अब लुप्त हो गये। वैष्णव और शैव धर्म काफी लोकप्रिय हुए। पूजा-प्रवृत्ति बढ़ी।
वैष्णव धर्म: राजाश्रय की वजह से वैष्णव धर्म बहुत फला-फूला। वैष्णव धर्म की नई शाखाएँ 'पांचरात्र' और 'भागवत' प्रकाश में आये। कई मंदिर बने।
शैवधर्म का काफी लोकप्रिय हुआ। मंदिर तथा मूर्तियाँ बनी।
अन्य ब्राह्मण धर्म: इसके अलावा, सूर्य, महिषासुरमर्दिनी, सप्तमातृका, गंगा, मकर, नाग, यक्ष आदि की पूजा का भी प्रचलन इसी युग में था।
बौद्ध धर्म: गुप्त शासक ब्राह्मण धर्म के अनुयायी थे फिर भी धार्मिक मामलों में सहनशील थे। इसलिए बौद्ध धर्म इस युग में पनपा। कई स्तूप, विहार, चैत्य, बने, कई मूर्तियाँ बनी। अनुशासन कठोर था। मालवा, मथुरा, काशी, गया आदि प्रमुख केन्द्र थे। कई विद्वान भी 'फाह्यान आदि' बौद्ध धर्म के अध्ययन हेतु भारत में आये।
जैन धर्म: जैन धर्म के इतिहास में भी गुप्त युग एक महत्वपूर्ण युग था। मथुरा और वल्लभी श्वेताम्बरियों के मुख्य केन्द्र बने - कलिंग, मैसूर दिगम्बरियों के, अलावा भी जैन धर्म का केन्द्र रहा है।
साहित्य: चूँकि गुप्त सम्राट स्वयं विद्वान थे और विद्वानों के आश्रयदाता थे, इसलिए इस काल में साहित्य की भी उन्नति हुई। वास्तव में एक दृष्टि से गुप्त युग संस्कृत भाषा एवं साहित्य के चरम उत्कर्ष तथा पूर्ण प्रस्फुटन का युग माना जा सकता है। संस्कृत भाषा को राष्ट्रीय होने का गौरव प्राप्त हुआ। कई धार्मिक और दार्शनिक ग्रन्थों का सृजन इसी समय का है। त्रिपिटक आदि टीकाएँ भी इसी समय लिखी गई। हरिषेण, वीरसेन शाब वत्सभट्टि, वासुल आदि प्रशस्तिकार भी इसी समय हुए। इस समय का संस्कृत साहित्य मधुरता, ओज, सरलता आदि गुणों से ओत-प्रोत है तथा साहित्य के विविध क्षेत्र से उच्च कोटि के ग्रन्थ इसी समय में उपलब्ध होते हैं। इसी कारण इस युग को बड़े-बड़े विद्वान संस्कृत साहित्य का स्वर्ण युग कहते हैं।
विज्ञान: साहित्य के साथ विज्ञान का भी इस युग में महत्वपूर्णरूप से उन्नति हुई। इस युग में तीन वैज्ञानिक हुए — आर्यभट्ट, वराहमिहिर और ब्रह्मगुप्त। ब्रह्मगुप्त ने न्यूटन से पहिले गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का पता लगाया था। [illegible] हुआ था। इस काल की कला में सजीवता ...
ललित कला: ललित कलाओं का चरम उत्कर्ष गुप्त काल में हुआ था। इस काल की कला में सजीवता, लालित्य, ओज, सौन्दर्य एवं आध्यात्मिकता का उच्चतम विकास हुआ।
चित्रकला: गुप्तयुग में चित्रकला उन्नति के चरमोत्कर्ष सीमा को छू चुकी थी। अजन्ता की विश्वविख्यात गुहा चित्रकारी अधिकतर इसी काल में सम्पन्न हुई। करुणा, घृणा, द्वेष, क्रोध, लज्जा, हर्ष, उत्साह, चिन्ता आदि के चित्रण में अजन्ता की गुफायें अद्वितीय हैं। इस काल में चित्रकला का उदाहरण हमें एलोरा, बाघ, बदामी, सिगिरिया तथा सित्तनवासल से भी प्राप्त होता है।
इस प्रकार निष्कर्ष के आधार पर कहा जा सकता है कि भारत के इतिहास में जीवन शक्ति का विकास जितना गुप्तकाल में हुआ उतना कभी नहीं हुआ और स्वर्ण युग कहा गया।

डॉ० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कॉलेज जयनगर